ग्रामीण विकास हेतु सामाजिक उद्यमिता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रारम्भ

पंतनगर। 21 जनवरी, 2010। विष्वविद्यालय के रतन सिंह सभागार में आज प्रातः "ग्रामीण विकास हेतु सामाजिक उद्यमिता" विषय पर आयोजित दो–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन हुआ। संगोष्ठी का आयोजन विद्यार्थी कल्याण विभाग के सांस्कृतिक चेतना परिषद एवं विवेकानन्द स्वाध्याय मंडल द्वारा संयुक्त रूप से विष्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती वर्ष के कार्यक्रम के अंतर्गत किया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुये कार्यवाहक कुलपति डा. के.के. सिंह ने वर्तमान सामाजिक स्थिति में आवष्यक परिवर्तन की दिषा में संगोष्ठी के विषय को प्रभावी एवं उपयुक्त बताया। उन्होंने कहा कि सभी क्षेत्रों यथा चिकित्सा, अभियांत्रिकी, कृषि, विभिन्न उद्योगों आदि से जुड़े विषेषज्ञों की सामाजिक उद्यमिता के द्वारा ग्रामीण विकास की प्रक्रिया में भूमिका है जिसमें युवा वर्ग की भूमिका अह्म है। गैर–सरकारी संस्थाओं की कार्य पद्धति का उदाहरण देते हुये डा. सिंह ने कहा कि सामाजिक उद्यमिता विकास के क्षेत्र में कार्य की कोई सीमा निर्धारित नहीं है।

कार्यक्रम में उपस्थित प्रगतिषील किसान एवं कृषि उद्यमी, श्री सुधीर चढ्ढा ने अपने सफल उद्यमी जीवन के अनुभव व्यक्त करते हुये कहा कि अपने और परिवार का विकास करने के अतिरिक्त क्षेत्र, राज्य, देष और समाज के हित में कुछ कल्याणकारी कार्य करने की भावना और विचार का होना जरूरी है। कुछ करने की क्षमता सबके अंदर है, हमें तय करना है अपनी रूचि और दक्षता के अनुसार कार्य करना इससे आत्म सम्मान भी प्राप्त होता है। उन्होंने कहा कि कठिन स्थितियों से गुजरने का अनुभव महत्वपूर्ण होता है। अधिष्ठाता, पषुचिकित्सा, डा. जी.के. सिंह ने प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुये गैर–पारम्परिक षिक्षा के महत्व पर अपने विचार प्रकट करते हुये कहा कि पारम्परिक षिक्षा के अलावा सामाजिक षिक्षा की भी आवष्यकता है। उन्होंने युवा भावना स्फूर्ति एवं चेतना को विषेष रूप से जगाये रखने का आह्वान किया। निदेषक, संचार केन्द्र एवं विभागाध्यक्ष, कृषि संचार विभाग, डा. बी. कुमार ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में सामाजिक उद्यमिता को परिभाषित करते हुये बताया कि यह सामाजिक संकटों, विसंगतियों को दूर करने से सम्बन्धित है। यह सामान्य उद्यमिता से लक्ष्य, समूह और नीतियों के मायने में अलग है। कार्यक्रम के प्रारम्भ में अधिष्ठाता, छात्र कल्याण, डा. अजीत कर्नाटक ने सभी का स्वागत करते हुये ग्रामीण विकास में युवा वर्ग की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया।

सत्र के दौरान संगोष्ठी में भाग लेने आये उत्तराखण्ड व अन्य राज्यों के महाविद्यालयों तथा विष्वविद्यालयों जैसे अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़; चन्द्रषेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विष्वविद्यालय; कानपुर; पंजाब कृषि विष्वविद्यालय, लुधियाना, आदि कुल 16 संस्थानों से लगभग 150 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। छात्र–छात्राओं ने संगोष्ठी के विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। उद्घाटन सत्र का संचालन कृषि संचार विभाग के सह–प्राध्यापक, डा. षिवेन्द्र कष्यप ने किया।

उद्घाटन सत्र के बाद के सत्र में भारतीय प्रबन्धन संस्थान, अहमदाबाद से स्वर्ण पदक प्राप्त सामाजिक उद्यमी श्री कौषलेन्द्र कुमार ने कहा कि उद्यमिता समाज के द्वारा प्रोत्साहित नहीं की जाती। जबकि दस हजार रूपये की नौकरी करने वाले को समाज में प्रषंसा मिलती है। उन्होंने कहा कि सामाजिक उद्यमिता के माध्यम से आप अपने सपने साकार कर सकते हैं और अपनी इच्छा के अनुरूप जीवन जी सकते हैं। उन्होंने समाज के उद्यमिता विकास की बारीकियों को क्रमबद्ध ढंग से समझाते हुये युवाओं को इस दिषा में चुनौती स्वीकार करने का आह्वान किया। श्री कुमार ने आई.आई.एम. से अपने अध्ययन के पष्चात पटना में सब्जी बेचने का कार्य स्वीकार करके देषभर में सनसनी फैला दी थी। श्री कौषलेन्द्र कुमार वर्तमान में बिहार और राजस्थान प्रान्तों में रसायनमुक्त सब्जियों के उत्पादन और विपणन का नेटवर्क चला रहे हैं जिसके अंतर्गत दस हजार से अधिक सब्जी उत्पादक और वितरकों को रोजगार मिल रहा है।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में सम्बोधित करते हुये कार्यवाहक कुलपति डा. के.के सिंह